GEMS Comic Book

GEMS

बराबरी की बात, हम बच्चों के साथ

उल्लेख – इंटरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वीमेन (आई. सी. आर. डब्लू.)
2016 'GEMS Comic Book', नई दिल्ली, आई. सी. आर. डब्लू.
Citation : International Centre for Research on Women (I.C.R.W.) 2016,
'GEMS Comic Book', New Delhi, I.C.R.W.

अवधारणा: नंदिता भाटला, प्रणीता अच्युत, हेमलता वर्मा, गुरप्रीत सिंह, शुभा भट्टाचार्य
चित्रण रूपांकन एवं मुद्रण : designDoubleVision, New Delhi, doublevision08@gmail.com

Copyright@2016 ICRW
यह कहानियां GEMS कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों के जीवन की केस स्टडीज पर आधारित हैं, और गोपनीयता बनाने के लिए उनके नाम बदलकर लिखी गयी हैं।
इस बुक को आई.सी.आर.डब्ल्यू. की अनुमति के बिना पूर्ण या आंशिक रूप से पुनः प्रकाशित किया जा सकता है यदि स्रोत का पूर्णतः उल्लेख किया जाये और पुनः प्रकाशन व्यावसायिक उद्देश्य से न हो।

GEMS की कहानी, बच्चों की जुबानी

प्रिय बच्चों,

कॉमिक बुक तो आप सबने खूब पढ़ी होगी – सुपर–हीरो की, चौम्पियन की। उन्हें देखकर लगता है कि काश हम में भी कुछ ऐसा खास होता – हम कुछ कर के दिखाते।

इस बुक में भी कुछ ऐसे ही हीरो और चौम्पियन हैं – पर काल्पनिक नहीं – असली जिन्दगी के, और वो भी 11–14 साल के बच्चे। ये सभी सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं। उनकी उम्र छोटी है, पर सोच ऊँची! यह बुक पढ़ेंगे तो आप भी मान जायेंगे इनकी हिम्मत और सोच को। जरूर सोचेंगे, यह हीरो बन सकते है तो हम क्यों नहीं!

यह बुक भारत के पुर्वीय राज्य झारखण्ड के सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले VI-VIII कक्षा के बच्चों की जिन्दगी की सच्ची घटनाओं पर आधारित है। इन बच्चों के स्कूलों में GEMS कार्यक्रम चलाया गया जिसका उद्देश्य बच्चों में जेंडर आधारित भेदभाव और हिंसा पर समझ बढ़ाना और सवाल उठाने के लिए प्रोत्साहित करना था। शायद इस कार्यक्रम ने बच्चों के दिल को गहराई से छुआ। GEMS से जुड़े बच्चों ने अपने सोच और व्यवहार को परख़ना शुरू किया। अपने घर और स्कूल में भी भेदभाव और हिंसा पर सवाल उठाने लगे। इतना ही नहीं, उन्होंने रिश्तों में बराबरी और सम्मान लाने के लिए प्रशंसनीय कदम उठाये। स्कूल में भी लड़कियों और लड़कों ने न केवल साथ बैठना और खेलना शुरू किया, बल्कि एक दुसरे की पढ़ाई में भी मदद करने लगे हैं। आओ, इनमें से ऐसे ही कुछ बच्चों की कहानियाँ पढ़े। इन्हे अपने दोस्तों और परिवार वालों के साथ पढ़ें और अपने विचार लिखें। इन बच्चों की तरह ही, आप भी बदलाव की ओर कदम बढ़ाये, इस बुक में अपनी कहानी जोड़े और दूसरों को प्रेरित करें।

GEMS - बराबरी की बात, हम बच्चों के साथ

GEMS से हमको मिली आवाज़, बाल विवाह को दे दी मात

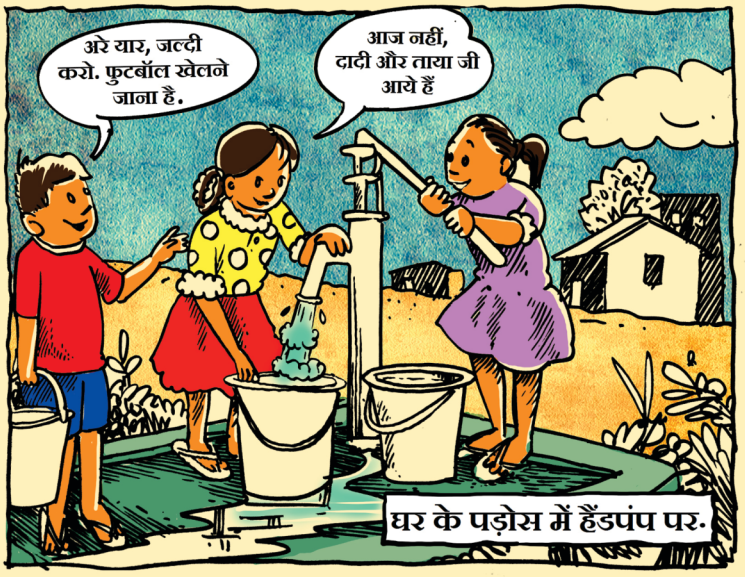
अरे यार, जल्दी करो. फुटबॉल खेलने जाना है.
आज नहीं, दादी और ताया जी आये हैं
घर के पड़ोस में हैंडपंप पर.

वाह! फिर तो मज़े हैं!
बिलकुल नहीं, वे मेरी शादी की बात करने आये हैं.
अभी से? पढ़ाई का क्या होगा?

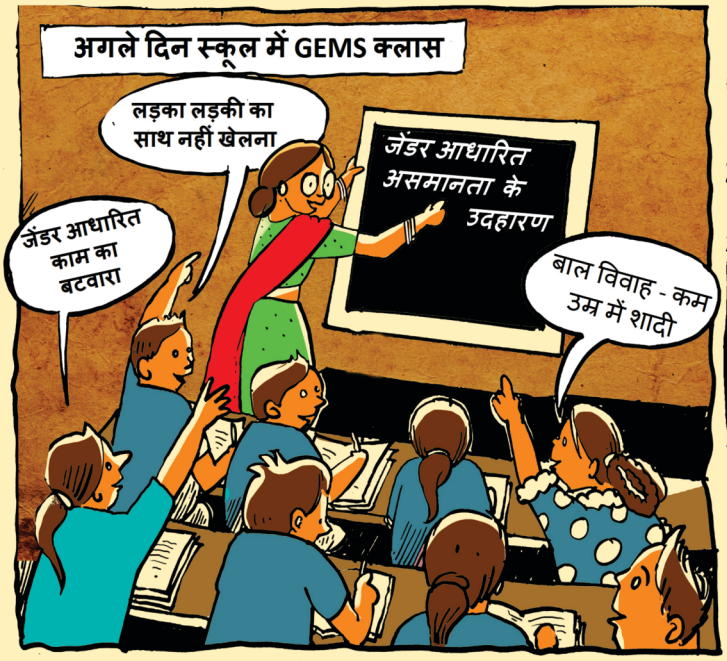
अगले दिन स्कूल में GEMS क्लास
लड़का लड़की का साथ नहीं खेलना
जेंडर आधारित काम का बटवारा
जेंडर आधारित असमानता के उदहारण
बाल विवाह - कम उम्र में शादी

ये अच्छे उदहारण हैं, और इन पर बात करना भी ज़रूरी है
जेंडर आधारित असमानता के उद
मैडम, बाल विवाह से क्या होता है?

बाल विवाह से छोटी उम्र में घर चलाने का बोझ, जल्दी माँ बनने से स्वास्थ्य पर खतरा... और कोई बताएगा?
पढ़ाई छूट जाना
हिंसा, दहेज के खिलाफ न बोल पाना

मैडम, सुना है इसको रोकने के लिए कानून भी बना है
सही कहा! पर याद रखो - कानून जरुरी है पर अकेले काफी नहीं. बाल विवाह को रोकने के लिए सबको मिल कर काम करना होगा.

जो टीचर बता रही थी, वैसा तुम्हारी दीदी के साथ भी हुआ था ना?
हाँ, पढ़ाई छूट गयी, बच्चे की डिलीवरी में बहुत दिककत हुई.
SCHOOL

शाम को निकिता के घर में
निकिता बड़ी हो गयी है. इसकी शादी का कुछ सोचा?
आपको शादी की उम्र दिखती है, पढ़ाई की नहीं?

और कितना पढ़ोगी? छोटी बहन की भी शादी करनी है
हम दोनों कॉलेज जायेंगे, नौकरी करेंगे. शादी की बात बाद में

बेटियों की पढ़ाई बहुत जरुरी है
पढ़ाई से अपने पैरों पर खड़े हो सकते है, शादी से नहीं.
कितना बोलती है.

आप लोग बड़ी दीदी की बुरी हालत इतनी जल्दी भूल गए? मैं पढ़ाई करुँगी और अपने परिवार की स्थिति बदलूंगी.
हम्म, निकिता तुम्हारी बात में दम तो है, अगर यह सच हो सके

दोस्तों! बाल विवाह अधिकारों का हनन है.
मिल कर हम इसे रोक सकते हैं. आप क्या सोचते हो?

इस कहानी से जुड़े कुछ प्रश्न नीचे दिए गए है। खुद सोचें और अपने परिवार और दोस्तों से भी बात करें। आप इन्टरनेट और अपने टीचर्स की भी मदद ले सकते हैं। विश्लेषन इस आधार पर करें कि क्या हमारे सोच और व्यवहार, हमें बराबरी की ओर ले जा रहे हैं या गैरबराबरी। अपने जवाब लिख कर या चित्र बना कर दे।

1. ऐसा क्यों सोचा जाता है कि लड़कियों को पढ़ने की जरूरत नहीं? क्या हर लड़की का सपना एक सा होता है? कुछ लड़कियों से पूछे और लिखें।

2. आपके जिले और राज्य में कितनी प्रतिशत लड़कियों की शादी 18 वर्ष से पहले हो जाती है? पिछले 10-15 सालों में क्या इन प्रतिशत में कुछ कमी आयी है?

3. बाल विवाह एक कुप्रथा क्यों है? कहानी में बच्चों ने कुछ कारण बताये हैं। इसके आलावा बाल विवाह के और दुस्प्रभाव क्या-क्या हैं? (आप दुस्प्रभाव लड़की, उसके पति, परिवार और समाज को ध्यान में रख कर सोचे या चर्चा करें) इसको रोकने के लिए क्या-क्या करने की जरुरत है? आप और आपके उम्र के बच्चे क्या-क्या कर सकते हैं?

4. यदि लड़की की शादी 19 वर्ष में की जाये तो क्या ये सारे दुस्प्रभाव ख़त्म हो जायेंगे? उम्र के अलावा, अन्य दुस्प्रभाव को दूर या कम करने के लिए और क्या करने की जरुरत है?

5. यदि निकिता के पापा और दादी नहीं मानते तो वो क्या करती? निकिता को आप क्या सलाह देंगे?

6. क्या आपने बाल विवाह रोकने की कोशिश की है या ऐसी कोशिश में किसी का साथ दिया है? अपने अनुभव को कहानी के रूप में लिखें या चित्र बनायें।

घर और बाहर सबका काम
कहाँ लिखा इसमें लड़का-
लड़की का नाम

रंजन का घर
चूल्हे पर काम करते हुए कितनी गर्मी लगती है, मुझे कभी लगा ही नहीं.
अब तुम्हें भी एहसास हो रहा है, साथ काम करने में अच्छा लगता है ना!
हाँ! मुझे भी.

रंजन के घर का आँगन
तुमने देखा, आजकल रंजन घर पर कभी झाड़ू लगता है, कभी बर्तन धोता है, कभी पानी लाता है."
अच्छा? मैंने ध्यान नहीं दिया.
हम्म..इसकी मम्मी कहीं गयी होगी या बीमार तो नहीं!

उसी दिन शाम को
रंजन बेटा तुम्हरी मम्मी ठीक तो हैं न?
हाँ आंटी, ठीक हैं..क्यों?
तुम्हें घर का काम करते हुए देखा है, तो सोचा...
मैं अपनी मर्ज़ी से घर का काम करता हूँ, स्कूल में भी यही पढ़ाते हैं.

पर ये काम तो लड़कियों के हैं न?
होटल में लड़के खाना बनाते हैं न? फिर घर में क्यों नहीं?
हाँ! घर अपना, तो काम भी अपना! पर कुनाल तो...

रंजन को एक तरकीब सूझती है
यार आज स्कूल में न खेलके घर जाके खेलें?
तुम्हें आजकल घर जाने की जल्दी क्यों रहती है?
अरे तुम चलो तो बहुत मज़ा आयेगा.
ठीक है !

रंजन का घर
अरे ये क्या कर रहे हो?!!
रुको खाना गरम करता हूँ और रात के लिए चावल भी तो पकाने हैं.
पर तुम्हारी दीदी तो घर में है ना, तुम क्यूँ कर रहे हो?
काम तो काम है! याद है GEMS में क्या कहा था?

GEMS में तो... लड़के-लड़की में समानता के बारे में?
हम्म... समानता तब होगी न जब दोनों मिलके काम करेंगे. अभी दीदी पढ़ाई ख़तम कर ले फिर हम तीनों खेलेंगे
दीदी भी? क्रिकेट?
अरे हाँ! वो तो बहुत अच्छा खेलती है!!
अरे देखो..कल तक तो सिर्फ रंजन ही लड़कियों के काम करता था, आज तो कुनाल भी...
हंसने दो, कोई फर्क नहीं पड़ता..घर का काम सब का काम होता है. इसमें क्या शर्म?
हाँ, जैसे आज तुम और मैं बदले हैं, वैसे कल और भी बच्चों में ऐसा बदलाव ज़रूर आएगा.
कुनाल का घर
अरे दीदी, आप तो बहुत अच्छा क्रिकेट खेल लेते हो!
पहले कभी साथ नहीं खेले ना, तो तुमको पता कैसे लगता?
GEMS में हमको बताया कि हर काम लड़के और लड़की बराबर कर सकते हैं. तो हमें लगा की हम साथ क्यूँ नहीं खेलते.
हम तो GEMS क्लास से काम के बटवारे के बारे में अच्छी समझ बना पाए.. और आप???

कैसी लगी कहानी? और रंजन के बारे में आपका क्या ख़याल है? चलिए इन प्रश्न-उत्तर के माध्यम से आपके विचार भी जान लेते हैं।

1. क्या रंजन के घर में, खासकर रसोई में काम करना उचित है? यदि हाँ, तो क्यों? यदि नहीं, तो क्यों नहीं?

2. रंजन को लगता है कि घर का काम सबका काम है - और किसी भी काम को करने में शर्म नहीं- पर उसका दोस्त ऐसा नहीं मानता। आप किसकी बात से सहमत हैं और क्यों?

3. आपके घर में कौन क्या क्या काम करता हैं? क्या आदमी/लड़के जो काम करते है और औरतें/लड़कियां जो करती हैं- उनमे कोई अंतर है? दिन भर की समय सूची बना कर देखें। ऐसे काम के बटवारे से क्या फायदा और नुक्सान है?

4. शायद रंजन की तरह आपने भी घर में काम के बटवारे को लेकर बदलाव लाने की कोशिश की होगी! क्या आपने किसी को बताया इसके बारे में? क्या कहा - बस कुछ लोगों को ही बताया? चलिए अब यहाँ अपनी कहानी सबको बताएं- एक कॉमिक आपक भी बनाए।

रोको हिंसा को
लड़कियों को नहीं
सुरक्षित बनाओ
जगह सभी

कुछ दिनों बाद
आफ़िया, ये नहीं मानेगा। किसी बड़े को बताना पड़ेगा।
उधर एक भैया नज़र आ रहे हैं। उनको बुलाते हैं।
भैया, हमें वो लड़का बहुत परेशान करता है, नाम पुकारता रहता है।
ये राकेश तो मेरे गाँव का ही है। मुझे इसका घर पता है। चलो उसके घर चलते हैं।
राकेश के घर पर
आंटी, आपका बेटा हमें बहुत परेशान करता है।
तुम लोग कुछ करती होगी, तभी बोलता होगा।
हमने कुछ नहीं किया। उसको समझाने के बदले आप हम पर दोष लगा रही हैं?
अगले दिन स्कूल में राकेश की बहन आफिया और रोहिणी के पास आती है
क्या समझती हो, तुम्हारी वजह से मेरे भाई को कल पापा से बहुत डांट पड़ी।
बिलकुल, हिंसा रोकना हम सब की जिम्मेदारी है।
और वो जो इनके साथ कर रहा था?
रास्ते को सुरक्षित बनाने के लिए इस हिंसा को रोकने की जरूरत थी, और हमने प्रयास करके उसे रोका।
आफिया और रोहिणी अपने दोस्तों को पूरी बात बताती हैं....
आफिया, रोहिणी... तुम दोनों ने बहुत अच्छा किया।
हमें भी बताते, हम सब मिलकर उसका सामना करते।
और पता है क्या हुआ, कल मेरे पापा मम्मी को रात में बाज़ार जाने से रोक रहे थे।
क्यों?
बोले कि औरतों को रात में अकेले बाहर नहीं जाना चाहिए। यह परंपरा के खिलाफ है।

मज़ा आया ना?
अब फट से कुछ सवालों के जवाब दो
और आगे पढ़ो 4 दोस्तों की कहानी

इस कहानी से जुड़े कुछ प्रश्न नीचे दिए गए है। खुद सोचें और अपने परिवार और दोस्तों से भी बात करें। चर्चा का विश्लेषन कर जवाब लिखें। विश्लेषन करते समय ध्यान रहे कि हमारे सोच और व्यवहार हमें बराबरी की ओर ले जा रहे हैं या गैरबराबरी के। GEMS डायरी में हिंसा पर दी गयी गतिविधियाँ आपको चर्चा और उसका विश्लेषन करने में मदद करेगी।

1. इस कहानी में क्या कोई हिंसा हो रही है? यदि हाँ, तो कौन किस पर कर रहा है? यदि नहीं, तो लड़कों का रोहिणी और आफिया के साथ किया व्यवहार क्या कहलायेगा?

2. इस कहानी में जो घटना हुई, उसका कौन जिम्मेदार है? क्या राकेश की माँ ने जो कहा वो सही था? आप क्या सोचते हैं?

3. आप रोहिणी और आफिया की जगह होते तो क्या करते? क्या लड़कियां आसानी से किसी की मदद ले सकती हैं? और क्यों?

4. ऐसी घटनाओं से लड़कियों और औरतों के जीवन पर क्या असर पड़ सकता है? क्या उनको कोई नुकसान हो सकता है ?

5. ऐसी घटना न हो इसके लिए क्या करना चाहिए? यदि आपने कोई कदम उठाया हो, तो अपनी कहानी जरुर लिखें!

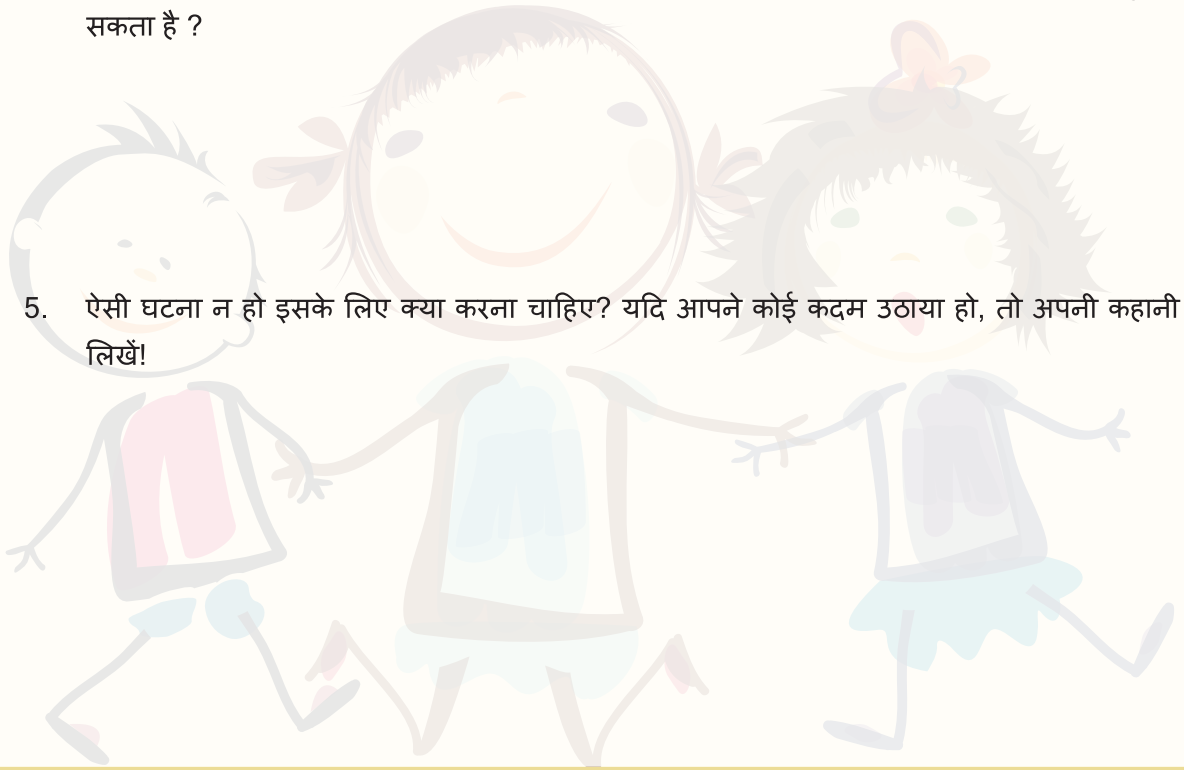

बातचीत की लहर चली हिंसा की नींव हिली

छुट्टियों में आतिफ का घर

फिर लड़ाई! चाचा की मदद लेता हूँ।

ओह! ऐसा?...चलो मैं समझता हूँ।

आतिफ ने चाचा की मदद ली

कितनी लड़ाई करते हो! कभी सोचा कि आतिफ पर क्या असर पड़ता है?

क्या करूं? गुस्सा आ जाता है, यह मानती भी तो नहीं।

हाँ...हम दोनों ही बोलते रहते है। आतिफ का भी सोचना चाहिए।

छुट्टियों में निधि अपने घर में बात करने की कोशिश करती है...

आप दोनों लड़ते हो तो मुझे बहुत डर लगता है और दुःख भी होता है...

ओह.....तुम्हे ऐसा लगता है? हमने तो कभी सोचा ही नहीं।

छुट्टियों में निधि का घर

लड़ाई से कुछ भी ठीक नहीं होता– देखो इस GEMS डायरी में भी लिखा है कि लड़ाई झगड़ा करना हिंसा है।

अरे वाह! तुम्हारे स्कूल में यह भी पढ़ाते हैं... विशवास नहीं होता।

हाँ, और यह भी कि मतभेद को बातचीत से सुलझाना चाहिए नाकि हिंसा से..

छुट्टियों में सिम्प्रीत अपने मामा के घर जाता हैं। वहां...

बहुत परेशान हैं भैया..

सिम्प्रीत के मामा का घर
गुरप्रीत भैया तुम इतने गुस्से में क्यूँ रहते हो।
परेशान हूँ! एक तो टीचर आते नहीं हैं – और जो पढ़ाते हैं वो समझ नहीं आता। गुस्से से दिमाग गरम हो जाता है।

तो गुस्सा करने से क्या होगा? किसी और तरह हल निकालना होगा– मामा से कभी बात की है?
नहीं! सोचा नहीं! तुम्हारे साथ चलकर बात करें?

मामा हमें आपसे कुछ बात करनी है।
पापा, मुझे पढ़ाई में बहुत दिक्कत हो रही है, स्कूल में जो पढ़ाते हैं समझ में नहीं आता।
ओह! तमी तुम इतना परेशान रहते हो. सारा टाइम लड़ना–चिल्लाना। मैंने सोची तुम्हे पढ़ना ही नहीं है! चलो...ऑफिस से आकर मैं तुम्हे पढ़ा दिया करूँगा.. मम्मी से भी मदद ले सकते हो..
देखा भैया, बातचीत से किसी भी समस्या का हल निकाला जा सकता है...

मज़ा आ गया छुट्टीयों मे।
अब हम सबको बता सकते है, बातचीत से किसी भी समस्या का हल निकाला जा सकता है।
नाकि हिंसा से...
अरे वाह सिम्प्रीत, ये तो बढ़िया रहा! यही है पते की बात।

कैसी लगी कहानी? इस कहानी से जुड़े कुछ प्रश्न नीचे दिए गए है। खुद सोचें और अपने परिवार और दोस्तों से भी बात करें। पर ध्यान रहे - क्या हमारे सोच और व्यवहार हमें बराबरी की ओर ले जा रहे हैं या गैरबराबरी की ओर।

1. अपने घर या आसपास हम अक्सर हिंसा की घटनाये देखते है। उनमें से ऐसे कोई घटना लिखें जो आपको याद रह गयी हो। क्या हुआ था? आपको कैसा लगा? आसपास के लोगों ने क्या किया? यह भी लिखें की समस्या सुलझाने के लिए क्या किया जा सकता था?

2. अगर आप आतिफ की जगह होते तो क्या करते? क्या कोई और उपाय सोच सकते हैं?

3. किसी भी समस्या या मतभेद को हम कैसे हल कर सकते हैं? सिमप्रित और उसके भाई को आप क्या सलाह देंगे?

4. क्या आपने कोई हिंसा को रोकने या मतभेद को हल करने की कोशिश की है? आप अपनी कहानी पर कॉमिक्स बनाये और सबको बताये।

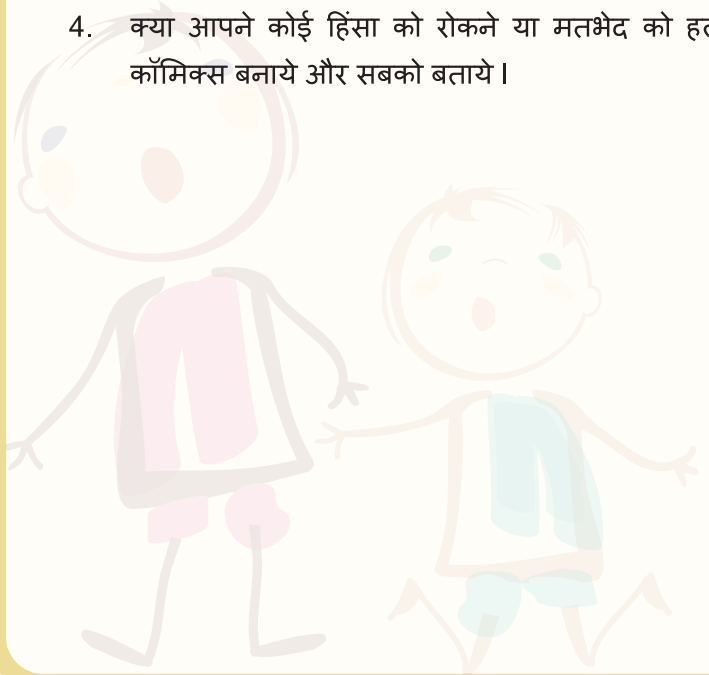

सबको दिया सम्मान, बराबरी की यही पहचान

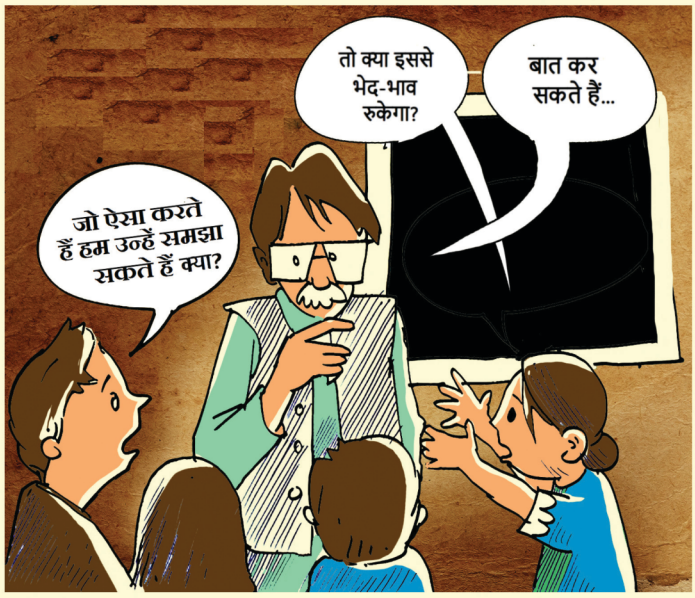
जो ऐसा करते हैं हम उन्हें समझा सकते हैं क्या?
तो क्या इससे भेद-भाव रुकेगा?
बात कर सकते हैं...

अगले दिन सुबह
नमस्ते अंकल! , प्रेरणा कहाँ है?
बेटा, वो तो पैदल स्कूल जाती है न.. जल्दी निकल गयी ..

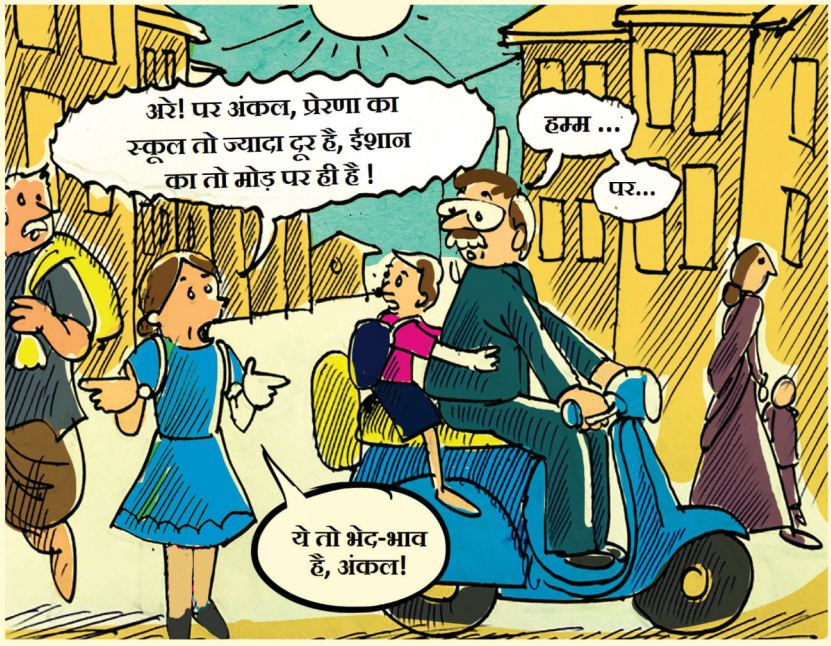
अरे! पर अंकल, प्रेरणा का स्कूल तो ज्यादा दूर है, ईशान का तो मोड़ पर ही है !
हम्म ...
पर...
ये तो भेद-भाव है, अंकल!

चलो! आज अंकल को हिम्मत कर के बोल ही दिया
पर भेद भाव तो मेरे घर के अन्दर भी है ! उसका भी कुछ करूँ????

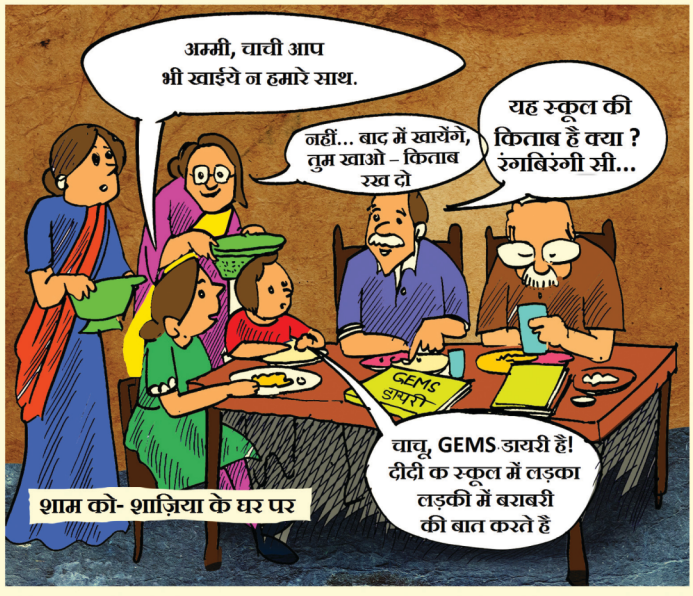
अम्मी, चाची आप भी खाईये न हमारे साथ.
नहीं... बाद में खायेंगे, तुम खाओ – किताब रख दो
यह स्कूल की किताब है क्या ? रंगबिरंगी सी...
GEMS डायरी
चाचू, GEMS डायरी है! दीदी क स्कूल में लड़का लड़की में बराबरी की बात करते हैं
शाम को- शाज़िया के घर पर

आप रोज़ आखिर में क्यों खाते हो? साथ खाने से अच्छा लगता है.
ये तो हमारी परंपरा है. सबको खिलाकर ही औरतें खाती हैं..
लेकिन ये तो भेद- भाव है.

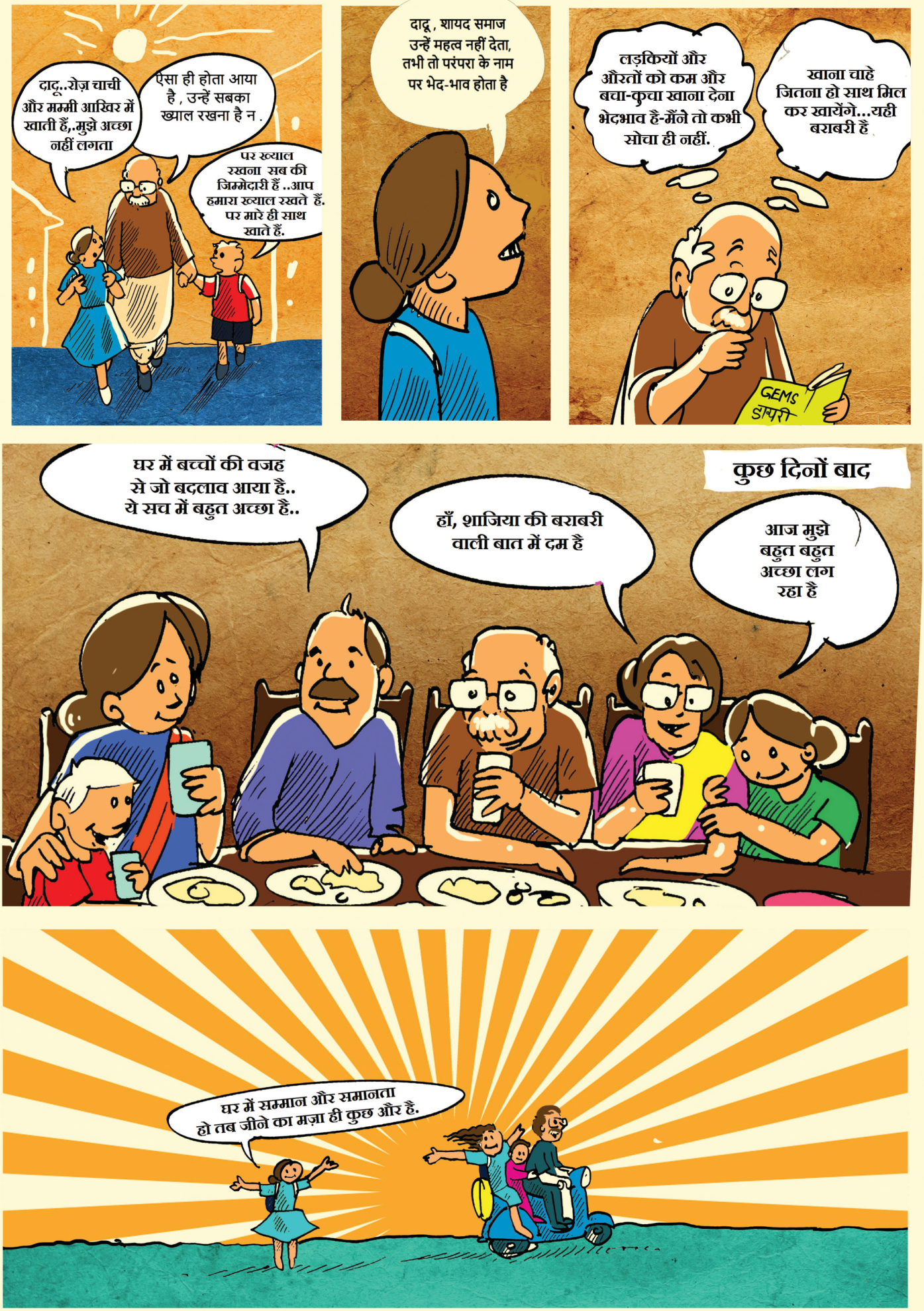
दादू..रोज़ चाची और मम्मी आखिर में खाती हैं,.मुझे अच्छा नहीं लगता
ऐसा ही होता आया है , उन्हें सबका ख्याल रखना है न .
पर ख्याल रखना सब की जिम्मेदारी हैं ..आप हमारा ख्याल रखते हैं. पर मारे ही साथ खाते हैं.
दादू , शायद समाज उन्हें महत्व नहीं देता, तभी तो परंपरा के नाम पर भेद-भाव होता है
लड़कियों और औरतों को कम और बचा-कुचा खाना देना भेदभाव है-मैंने तो कभी सोचा ही नहीं.
खाना चाहे जितना हो साथ मिल कर खायेंगे...यही बराबरी है
GEMS डायरी
कुछ दिनों बाद
घर में बच्चों की वजह से जो बदलाव आया है.. ये सच में बहुत अच्छा है..
हाँ, शाजिया की बराबरी वाली बात में दम है
आज मुझे बहुत बहुत अच्छा लग रहा है
घर में सम्मान और समानता हो तब जीने का मज़ा ही कुछ और है.

इस कहानी से जुड़े कुछ प्रश्न नीचे दिए गए है। खुद सोचें और अपने परिवार और दोस्तों से भी बात करें। चर्चा का विश्लेषन कर जवाब लिखें। विश्लेषन इस आधार पर करें की क्या हमारे सोच और व्यवहार हमें बराबरी की ओर ले जा रहे हैं या गैरबराबरी। अपने जवाब लिख कर या चित्र बना कर दे सकते हैं।

1. क्या ऐसा होता है कि अक्सर औरतें और लड़कियां आखिर में खाती हैं? (पता करे की आपके आसपास के घरों में कब खाती हैं? सबके साथ या बाद में?) ऐसा क्यों होता हैं? अलग और आखिर में खाना उन्हें कैसा लगता है?

2. इससे औरतों और लड़कियों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

3. यदि औरतें और लड़कियां पहले खाएं तो क्या होगा? आपके अनुसार कैसी परंपरा होनी चाहिए?

4. क्या आपने कभी गैरबराबरी वाले इस परंपरा के बारे में सोचा, या इसको बदलने की कोशिश की? यदि हाँ, तो कैसा अनुभव रहा? यदि नही की, तो अब करें और अपने अनुभव लिख कर या चित्र बना कर व्यक्त करें।

GEMS कार्यक्रम के बारे में आपको और जानकारी यहाँ मिल सकती है

ICRW Asia Regional Office, C-59, South Extension II, New Delhi-110049
P: +91-11-46643333, F:+91-11-26265142
www.icrw.org/icrw-asia-regional-office, info@icrw.org

ICRW
INTERNATIONAL CENTER FOR RESEARCH ON WOMEN
PASSION. PROOF. POWER.

CINI
help the mother help the child...

LEADS
Empowering People...